पञ्चक्रोशीयात्राप्रकाश।

जिसे

काशीयात्राप्रकाशक श्री ६ गोरजी

पण्डित रामकृष्णजी दीक्षित

के शिष्य

श्रीद्वारिकानाथजी दूबे ने धर्मार्थ

तथा सर्वसाधारण के उपकारार्थ

प्रकाशित किया।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ।

सम्वत् १९६१

श्रीरामकृष्णगुरुचरणकमलेभ्यो नमः।

श्रीकाशीपुरी में पञ्चक्रोशी के प्रकाशित प्राचीन देवमन्दिर तथा तीर्थों की गोहार।

प्रगट हो कि श्रीकाशीपुरी में पञ्चक्रोशी के देवमन्दिर और तीर्थों की जो दशा हो रही है उस पर सम्पूर्ण धर्मज्ञ महाशयों को अवश्य ध्यान देना उचित है। काल के प्रभाव से वे सब ऐसे जीर्ण हो रहे हैं कि उनके अस्त व्यस्त हो जाने का बड़ा भारी भय है। जब पञ्चक्रोशी के मार्ग से चलने में आता है तब देवमन्दिर तथा तीर्थों की व्यवस्था देख पड़ती है, जिनके देखने से अत्यन्त क्लेश होता है और उनके शीघ्रही नष्ट हो जाने का बड़ा भारी भय है। सबही देवमन्दिरों तथा तीर्थों में थोड़ी बहुत मरम्मत (जीर्णोद्धार) की आवश्यकता है, और इस समय में अल्पव्यय से हो सकता है। पश्चात् दशगुणित व्यय करने से भी कार्य की पूर्णता में सन्देह होता है। अतएव—दोहा।

काशी के धर्मज्ञ जन तीरथ पूजन हेत ।
यामें नित उद्यत रहो तन मन धन चित चेत॥

जो तीरथ बहु काल सों जीर्ण भये असमर्थ।
ताहिँ सुधारन हेतु सब सज्जन होंहि समर्थ॥

काशीजी में काशीकृत पातकों का बड़ा भारी भय रहता है। इनसे मुक्ति के अर्थ पञ्चक्रोशी-यात्रा तथा धनवानों को शिवस्थापन, तथा ब्रह्म-पुरी बनवाकर ब्राह्मणों को वास कराना, तथा धर्मशाला निर्माण करनाही है। ये सब उपाय श्री विश्वनाथजी महाराज ने श्रीपार्वतीजी महाराणी से कलिकाल के मनुष्यों के हेतु कहे हैं, परन्तु सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म जीर्णोद्धार ही को मुख्य ठहराया है, ऐसा सभी विद्वान् लोग कहते हैं। जैसा कि काशीखण्ड में लिखा है, श्लोक।

कालेन भङ्गमापन्नं जीर्णोद्धारं करोति यः।
इह तस्य फलस्यान्तः प्रलयेऽपि न जायते॥

काल से भङ्ग (देवस्थान) का जो जीर्णोद्धार कराता है प्रलय में भी उसके पुण्यरूपी फल का अन्त नहीं होता। यह शिव वाक्य है, इस परमे-श्वरी वाक्य पर सबको ध्यान देकर श्रद्धा विश्वास करना अवश्य उचित है। धन रहते शठता त्याग के जो प्राणी ऐसे धर्महित शुभकार्य में द्रव्य ल-

गाते हैं उनको अनन्तगुणित फल प्राप्त होता है।

क्योंकि कलियुग में देवालय की रक्षा होना दुर्लभ है और लिङ्ग की रक्षा तथा पूजा भी नित्य नहीं होती। काशी में बनाया हुआ शिवालय तथा शिव को भग्न देख के कर्त्ता के हर्ष का नाश और पश्चात्ताप होता है और जो जीर्णोद्धार करता है वह निःसंदेह होता है ऐसा ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है।

कलौ देवालयस्यापि रक्षा देवि सुदुर्लभा ।
लिङ्गरक्षा तथा भग्ने नित्यं पूजापि नो भवेत् ॥
शिवं शिवालयं काश्यां कृतं भग्नं निरीक्ष्य च ।
अनुतापो भवेत्तस्य कर्त्तुः प्रीतिहरः परः ॥

इसी कारण से सब धर्मों से श्रेष्ठ पुण्य जीर्णोद्धार करनेवालों को प्राप्त होता है ।

जीर्णोद्धारश्च ये कुर्युं निःसन्देहा भवन्ति ते।

राज्य कोष खजाना धन दौलत सब, यहां का यहांही रह जाता है, परन्तु धर्म्माधर्म्म का विचार केवल इसी जीवात्मा के साथ जाता है। वर्तमान समय में बड़े २ राजे महाराजे रानी महाराणी सेठ साहूकार साधु महात्मा

काशीस्थ वा देशान्तरस्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि सभी लोग पञ्चक्रोश किया करते हैं, परन्तु जीर्ण (पुराने) मन्दिर तथा तीर्थों पर किसी की भी दृष्टि नहीं पड़ती, यदि पड़ी होती तो यह दशा (व्यवस्था) न हुई होती। यदि कोई कोई धर्मात्मा ध्यान भी देते हैं तो उनको असाध्य मालूम होता है, कारण उन्हें यह नहीं मालूम होता कि लाख अथवा पचास हजार रुपया अथवा कितना द्रव्य व्यय होगा। इसी कारण वे लोग उत्साहरहित हो जाते हैं। अतएव मैं पञ्चक्रोश यात्रा को गया और अल्पज्ञान से अनुमान करके आया। तदनन्तर मेरे विचार में आया कि इस व्यवस्था को सर्व साधारण की सेवा में प्रकाश करना ही मेरा मुख्य धर्म है, तब मैंने अपने पूज्य गुरुजी श्री ६ गोरजी महाराज के चरण कमलों का ध्यान हृदय में धर कर पञ्चक्रोशी यात्रा प्रकाश नामक पुस्तक संग्रह करके छपवाकर प्रकाश किया। धर्मज्ञ महाशय लोग इस व्यवस्था पर विचार करेंगे, और सब महाशयोंको इस पुस्तकसे ज्ञात होगा कि किस२

देवमन्दिर तथा तीर्थों के जीर्णोद्धार में कितना द्रव्य व्यय होगा और जो महाशय इस पुस्तकको अपने साथ पंचक्रोशीयात्रा में ले जावेंगे उन महाशयोंको देवताओं के नाम तथा ठिकाना नियम वासस्थान और फल सब विदित होजायगा। धर्मज्ञ महाशयों से मेरी प्रार्थना है कि एकबार आद्योपान्त इस पुस्तक को अवश्य पढ़कर मेरे परिश्रम को सुफलकरैंगे और जो नित्य पाठकरेंगे उनको श्रीविश्वनाथजी अनन्तगुणित फल देवैंगे।

हे श्री १०८ मन्महाराजाधिराजद्विजराज काशीनरेश बहादुर जी०सी०आई०ई०! श्रीमान् को अवश्य ध्यान देना उचित है, क्योंकि यह श्रीमान् की राजधानी का कार्य है। श्रीमान् काशी के प्रभु हैं, हे प्रभो! प्रतिदिन सहस्रों मुद्रा व्यय होता है यदि पंचक्रोशी में ५०००) व्यय होजायगा तो कुछ दिन के लिये छुट्टी हो जायगी। यदि दस सहस्र मुद्रा व्यय होगा तो कार्य पूर्ण अचल हो जायगा। विचार करके देखिये यदि इस दरबार से न होगा तो कौन करेगा। श्रीमान् की कीर्ति यश और पुण्य का जन्मजन्मान्तर सदैव

लोग स्मरण करेंगे, श्रीविश्वनाथजी अवश्य श्रीमान् के वंश की वृद्धि करेंगे।

श्रीमान्यवर आनरेबुल मुंशी माधोलाल साहब! कदवां गांव आपका है केवल एक हजार रु० में कर्दम तीर्थ का जीर्णोद्धार होगा। आपका बहुत सा रुपया खर्च हुआ ही करता है यदि धर्म्मकार्य्य में खर्च होगा तो कुछ क्षति नहीं जन्मजन्मान्तर नाम यश पुण्य होगा। यह कार्य श्रीमान्यवर के योग्य है।

देशदेशान्तरस्थ राजा महाराजा रानी महारानी सेठ साहूकार सभी को ध्यान देना अवश्य उचित है। श्रीमान् मारवाड़ी सेठ महाशयों को अवश्य ध्यान देना योग्य है क्योंकि इस समय में आपही लोगों की धर्म्मरूपी पताका फहरा रही है, जहां तहां आपही लोगों की कीर्ति सुनाई दे रही है, आपही के धर्मरूपी सूर्य्य का उदय है। पंचक्रोशी की सड़क कहीं २ बड़ी खराब हो रही है, हमारी न्यायवान् सर्कार को इस ओर ध्यान देना अत्यावश्यक है।

काशीयात्रा प्रकाशक
गोरजी के शिष्य द्वारकानाथ दूबे।

॥ श्रीरामकृष्णगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥

अथ पञ्चकोशी यात्रा प्रकाश ।

श्रीपार्वतीजी महारानी ने हाथ जोड़कर श्रीविश्वनाथ जी महाराज से प्रश्न किया कि हे काशिनाथ ! मम नाथ त्रिपुरारी, मैंने आपके मुख से सुना है कि, काशीकृत पातकों का बड़ा भारी दुःख होता है, इस दुःख से मुक्ति के अर्थ कोई सुगम उपाय बताइये जिससे कलिकाल के मनुष्यों का उद्धार होय । यह प्रश्न सुन कर श्रीविश्वनाथजी महाराज प्रसन्न होकर बोले,—हे सुन्दरी ! तुमने इस कलिकाल के जीवों के उपकारार्थ बहुतही अच्छा प्रश्न किया है, सो हे प्रिये ! अब ध्यान देकर सुनो. मैं कहता हूं ।

श्रीमहादेव उवाच ।

यदि मनुष्य किसी स्थान में पाप किये होय तो वह पाप पुण्यक्षेत्रों में छूट जाता है । पुण्यक्षेत्र का पाप गङ्गा प्राप्त होने पर छूटता है । गङ्गातीर का पाप काशीपुरी में नष्ट होता है । काशी का पाप उसके भीतर वाराणसी में नष्ट होता है । वाराणसी का पाप उसके भीतर अविमुक्त में नष्ट होता है । अविमुक्त का पाप उसके भीतर अन्तरगृही में छूटता है । अन्तरगृह का पाप वज्रलेप होता है, अर्थात् वज्र की नाईं जिसके ऊपर गिरता है फिर उसको छोड़ता नहीं, घोरघातही कर डालता है. उसी तरह पापकर्त्ता को नहीं छोड़ता, लिप्तही रहता है । इस वज्रलेप पाप के

छेदन करनेवाली पञ्चक्रोशी-प्रदक्षिणा है। इसलिये सबको प्रयत्न से पञ्चक्रोशी-प्रदक्षिणा करना अवश्य उचित है। ऐसा ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति ।
पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं गङ्गातीरे विनश्यति ॥
गङ्गातीरे कृतं पापं काशीं प्राप्य विनश्यति ।
काश्यान्तु यत्कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ॥
वाराणस्यां कृतं पापमविमुक्ते विनश्यति ।
अविमुक्ते कृतं पापमन्तर्गेहे विनश्यति ॥
अन्तर्गेहे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ।
वज्रलेपच्छिदां ह्येतत्पञ्चक्रोशप्रदक्षिणां ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कुर्यात् क्षेत्रप्रदक्षिणाम् ॥

अतएव हे सुन्दरी! मैं भी भैरव के भय से सदा सर्वदा दक्षिणायन तथा उत्तरायण दोनों अयनों में प्रदक्षिणा अर्थात् पञ्चक्रोशीयात्रा करता हूं। ऐसा सनत्कुमारसंहिता में लिखा है।

दक्षिणे चोत्तरे चैव ह्ययने सर्वदा मया ।
क्रियते क्षेत्रदाक्षिण्यं भैरवस्य भयादपि ॥

यदि दोनों अयनों में न हो सके तो वर्ष में एक बार तो अवश्य करना उचित है। क्योंकि ब्रह्मवैवर्तपुराण में लिखा है कि जो काशी में बस कर नित्य गङ्गा में स्नान

करता है उसको भी प्रति वर्ष पञ्चक्रोशी यात्रा करना अवश्य उचित है।

काश्यां तिष्ठति यो नित्यं स्नाति भागीरथीजले।
कुर्यात्सांवत्सरीं यात्रां पञ्चक्रोशस्य सुन्दरी॥

हे भामिनी! जिसने काशी की त्रैलोक्यपावनी प्रदक्षिणा करी, वह सातों द्वीप सातों समुद्र सम्पूर्ण पर्वतों के सहित पृथिवी-प्रदक्षिणा कर चुका। ऐसा नारदीय पुराणमें लिखा है

काशीप्रदक्षिणा येन कृता त्रैलोक्यपावनी।
सप्तद्वीपा साब्धिशैला कृता तेन प्रदक्षिणा॥

हे प्रिये! जबहीं बन पड़े तबहीं पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा करना उचित है, मासादि तथा काल का विचार नहीं करना, कारण वही शुभकाल है जिसमें श्रद्धा का उदय होता है, ऐसा ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है।

यथाकथञ्चिद्देवेशि पञ्चक्रोशप्रदक्षिणाम्।
कुर्यादेव न मासादि चिन्तयेद्धर्मकोविदः॥
स एव शुभदःकालो यस्मिन् श्रद्धोदया भवेत्।

हे सुन्दरी! काशीवासी प्रमाद वा किसी कारण से काशी त्याग करके बाहर जाता है फिर दैवयोग से पुनः आवे तो पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा करने से उसकी शुद्धि होती है। ऐसा ब्रह्मवैवर्तपुराण में लिखा है।

वाराणसीं समासाद्य प्रमादाद्यो वहिर्गतः।
सदैवात्पुनरागत्य दक्षिणेन विशुद्ध्यति॥

अब मैं पञ्चक्रोशी यात्रा का प्रकार ब्रह्मवैवर्तपुराण की रीति से कहता हूं। हे सुमुखि ध्यान देकर सुनो। पञ्च-क्रोशीयात्रा के पहिले दिन प्रात:काल गङ्गास्नान करके नित्य यात्रा को करना। नित्य यात्रा की विधि काशीखण्ड अध्याय १०० में लिखी है। पहिले हमारे (विश्वनाथजी) के मन्दिर के पास अक्षयवट (हनुमानजी के मन्दिर में) आदित्य और द्रौपदी का पूजन करना, हमारे (विश्वनाथ) मन्दिर में विष्णुभगवान का पूजन करके वहां से बाहर जाकर दण्डपाणिजी का पूजन करे, वहां से चलके ज्ञानवापी के नैऋत्यकोण में महेश्वर का पूजा करना, तब ढुंढिराजगणेश का पूजन करके ज्ञानवापी पर आवना और आचमन पूजन करके तब नन्दिकेश्वर और तारकेश्वर का पूजन करके उसी ज्ञानवापी के अग्निकोण में महाकालेश्वर का पूजन करना। पुन: दण्डपाणिजी की पूजा करना। तदनन्तर हमारा (विश्वनाथजी का) तुम्हारा (अन्नपूर्णाजी) पूजन करे। यही नित्य यात्रा है। तत्पश्चात् मुक्तिमण्डप आयके सङ्कल्पपूर्वक ढुंढिराज का पूजन करना, और बने तो अन्तरगृही यात्रा करना, हविष्य एक वार भोजन करके रहना, दूसरे दिन स्नान नित्य यात्रा करके हमारा (विश्व-नाथजी का) तुम्हारा (अन्नपूर्णाजी) पूजन करने के उप-रान्त मुक्तिमण्डप में आयके महती प्रतिज्ञा करना। काशी में कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात से किया हुआ पाप उसके शुद्धि के हेतु और अतिशय पुण्य प्राप्ति के अर्थ

पञ्चक्रोशीयात्रा, पञ्चक्रोशात्मक शिवलिङ्ग ज्योतिरूप सनातन श्रीविश्वेश्वर अन्नपूर्णा लक्ष्मी श्रीविष्णुभगवान करके अधिष्ठित ढुंढिराजादि विनायकों से आवृत्त द्वादशादित्य युक्त नृसिंह, केशव तीन कृष्ण, तीन राम, कूर्म, मत्स्य और अनेक विष्णु के अवतार तथा अनेक शिवलिङ्गों करके युक्त तथा गौरी आदि शक्तियों से संयुक्त, क्षेत्र की प्रदक्षिणा हम करते हैं। ऐसी प्रतिज्ञा करके हमसे (श्रीविश्वनाथजी) तुमसे (अन्नपूर्णाजी) प्रार्थना करे !

प्रार्थनामन्त्र।

पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं करिष्ये विधिपूर्वकम् ।
प्रीत्यर्थं तव देवेश सर्वाघौघप्रशान्तये ॥

ऐसी प्रार्थना करके मौनपूर्वक पुन: ढुंढिराज का पूजन करके प्रार्थना करना।

प्रार्थनामन्त्र।

ढुंढिराजगणेशान महाविघ्नौघनाशन ।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थं देह्याज्ञां कृपया विभो ॥

ऐसी प्रार्थना करके हमारी (श्रीविश्वनाथजी की) प्रदक्षिणा करके साष्टाङ्ग दण्डवत करना। अनन्तर मोद, प्रमोद, सुमुख, दुर्मुख, गणनाथादि पञ्चविनायकों का पूजन करके दण्डपाणि और कालभैरव का पूजन कर पुन: हमारा (श्रीविश्वनाथजी) पूजन करने के बाद श्रीमणिकर्णिका में स्नान कर तब पञ्चक्रोशी के देवताओं का पूजन करतेचलना।

मरम्मत का अंदाज :

नं० नाम देवता ।	पता ।
१ मणिकर्णिकायै नमः ।	मणिकर्णिकाघाट ।
२ मणिकर्णिकेश्वराय नमः ।	तथा ।
३ सिद्धिविनायकाय नमः ।	तथा ।
४ गङ्गाकेशवाय नमः ।	ललिताघाट ।
५ ललितादेव्यै नमः ।	तथा ।
६ जरासिंधेश्वराय नमः ।	मीरघाट ।
७ सोमेश्वराय नमः ।	मानमन्दिरघाट ।
८ दालभ्येश्वराय नमः ।	तथा ।
९ शूलटङ्केश्वराय नमः ।	दशाश्वमेधघाट ।
१० वाराहेश्वराय नमः ।	तथा ।
११ दशाश्वमेधेश्वराय नमः ।	तथा ।
१२ वन्दीदेव्यै नमः ।	तथा ।
१३ सर्वेश्वराय नमः ।	पांडेघाट ।
१४ केदारेश्वराय नमः ।	केदारघाट ।
१५ हनुमदीश्वराय नमः ।	हनुमानघाट ।
१६ लोलार्काय नमः ।	प्रसिद्ध भदैनी ।
१७ अर्कविनायकाय नमः ।	तथा ।
१८ सङ्गमेश्वराय नमः ।	अस्सीसङ्गम ।
१९ दुर्गाकुण्डाय नमः ।	दुर्गाजी प्रसिद्ध ।
२० दुर्गविनायकाय नमः ।	तथा ।
२१ दुर्गादेव्यै नमः ।	तथा ।

नं० नाम देवता। मरम्मत का अन्दाज। पता।

जय दुर्गे महादेवि जय काशिनिवासिनि।
क्षेत्रविघ्नहरे देवि पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

२२ विष्वक्सेनेश्वराय नमः। करमैतापुर गांव।
२३ कर्दमतीर्थाय नमः १०००)। कदवां गांव आनरेबुल मुंशी माधोलालजी का है। कर्दमतीर्थ में १०००) की सहायता की आवश्यकता है। यह तीर्थ श्रीरानीभवानी का बनाया हुआ है, यहां पक्का घाट है।
२४ कर्दमेश्वराय नमः। तथा।
२५ कर्दमकूपाय नमः। १०) तथा।
२६ सोमनाथेश्वराय नमः। ५) तथा।
२७ विरूपाक्षाय नमः। तथा।
२८ नीलकण्ठेश्वराय नमः। तथा।

कर्दमेश महादेव काशिवासिजनप्रिय।
त्वत्पूजनान्महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

२९ नागनाथेश्वरायनमः। ५) अमरा गांव बाबूचितईपुरका
३० चामुण्डायै नमः। अवड़े गांव, रजवी जरीह का।
३१ मोक्षेश्वराय नमः। तथा तथा।
३२ करुणेश्वराय नमः। तथा तथा।
३३ वीरभद्रेश्वराय नमः। २५) देवहनागांव तथा।
३४ विकटाक्षदुर्गायैनमः। १०) तथा तथा।
३५ उन्मत्तभैरवाय नमः। १००) देवरागांव श्रीमान् पण्डित बेनीलालजी का है।

नं०	नाम देवता ।	मरम्मत का अन्दाज ।	पता ।
३६	नीलगणाय नमः	१०) तथा ।	तथा ।
३७	कालकूटगणाय नमः	२०) तथा ।	तथा ।
३८	विमलदुर्गायै नमः	२०) तथा ।	तथा ।
३९	महादेवेश्वराय नमः	१८) तथा ।	तथा ।
४०	नन्दीकेशगणाय नमः	२५) तथा ।	तथा ।
४१	भृङ्गीरीटगणाय नमः	२०) तथा ।	तथा ।
४२	गणप्रियाय नमः	१५) तथा ।	तथा ।
४३	विरूपाक्षाय नमः	७) गौरागांव	श्रीमहा०काशीनरेश ।
४४	यक्षेश्वराय नमः	५) मातलदेईचक्क ।	मुः हीरादेई ।
४५	विमलेश्वराय नमः	५) पयागपुर ।	श्रीमन्महाराजा
४६	मोक्षेश्वरायनमः	१०) तथा ।	धिराजकाशी-
४७	ज्ञानेश्वरायनमः	२० तथा ।	नरेश बहादुर ।
४८	अमृतेश्वरायनमः	१०) अमवारीगांव	मुः शंकरलाल
४९	गन्धर्वसागरायनमः	२०००) भीमचण्डीगांव ।	
५०	भीमचण्डीदेव्यैनमः	१००) श्रीमन्महाराजाधिराज-काशी	
५१	चण्डविनायकाय नमः		बाबू सकरकन्दसिंह ।
५२	रविरक्ताक्षगन्धर्वाय नमः	१०) । इस तलाव में २०००)	

को अत्यन्त आवश्यकता है । श्रीमहाराज काशिराज बहादुर को अवश्य ध्यान देना चाहिये ।

५३	नरकार्णवतारशिवाय नमः ।	तथा	तथा ।

भीमचण्डिप्रचण्डानि मम विघ्नानि नाशय ।
नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

नं०	नाम देवता।	मरम्मत का अन्दाज।	पता।
५४	एकपादगणायनमः	१००)	कचनारगांव मुं: शंकरलाल।
५५	महाभीमाय नमः	१०)	हरपुरगांव हर्री का तलाव।
५६-५७	भैरवायनमः भैरव्यैनमः	१०)	हरसोतगांव।
५८	भूतनाथेश्वरायनमः	१०)	दीनदासपुरगांव।
५९	सोमनाथेश्वरायनमः	१०)	लगोंटिया हनुमान प्रसिद्ध
६०	सिंधुसरोधनतीर्थाय नमः।		तथा।
६१	कालनाथेश्वरायनमः।		जनसागांव।
६२	कपर्दीश्वराय नमः	८)।	हरपुर, हर्री का तलाव व हरसोत गांव व दीनदासपुर गांव व जनसा गांव। इन सब गावों के अधिकारी श्रीमन्महाराजाधिराज-काशिराज हैं, और ठीकेदार बाबू राजनारायणसिंह हैं।
६३	कामेश्वराय नमः	२५)	चौखण्डीगांव बाबूलक्ष्मणसिंह।
६४	गणेश्वराय नमः	१८)	तथा तथा।
६५	वीरभद्रगणाय नमः	१८)	तथा तथा।
६६	चारुमुखगणायनमः	१२)	तथा तथा।
६७	गणनाथेश्वराय नमः	२०)	भटौली बाबू जैकिसुनदास के पुत्र बाबू गोपालदास का है।
६८	देहलीविनायकायनमः	२५)	तथा तथा।
६९	षोड़शविनायकायनमः		तथा तथा।
७०	उद्दण्डविनायकायनमः	१०)	आगे
७१	उत्कलेश्वराय नमः	१०)	छीरमपुर गांव।
७२	रुद्राणीदेव्यै नमः		आगे।

नं० नाम देवता। मरम्मत का अन्दाज। पता।
७३ तपोभूम्यै नमः तत्रैव।
७४ वरुणातीर्थाय नमः ७५ रामेश्वराय नमः। करौनागांव।
७६ सोमेश्वराय नमः ७७ भरतेश्वराय नमः रामेश्वरगांव।
७८ लक्ष्मणेश्वराय नमः ७९ शत्रुघ्नेश्वराय नमः। तथा।
८० द्यावाभूमीश्वराय नमः ८१ नहुषेश्वराय नमः। तथा।

यहां पर मन्दिर की वहार दिवारी और फाटक बहुतही जीर्ण हो गया है अनुमान १०००) में मरम्मत हो जायगा।

हीरमपुर, करौना, (रामेश्वर) ये दोनों गांव, बाबू अनन्तूसिंहजी के हैं। अब बाबू प्रसिद्धनारायणसिंह नईवस्ती बनारस में रहते हैं।

श्रीरामेश्वर रामेण पूजितस्त्वं सनातनः।
आज्ञां देहि महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते॥

८२ असंख्याततीर्थेभ्यो नमः। वरुणापार।
८३ असंख्यातलिङ्गेभ्यो नमः २०, तथा।
८४ देवसन्धेश्वराय नमः। करौनागांव में। यह गांव बाबू-गुलाबदास व बाबू गोविन्ददास का है।
८५ पाशपाणिविनायकाय नमः। सदरबाजार।
८६ पृथ्वीश्वराय नमः। खजुरी गांव।
८७ स्वर्गभूम्यै नमः। तत्रैव।
८८ यूपसरोवरतीर्थाय नमः। १५०) दीनदयालपुर, यह गांव बाबू मोतीचन्द का है।

नं०	नाम देवता।	मरम्मत का अन्दाज।	पता।
८९	वृषभध्वजतीर्थाय नमः (कपिलधारा तीर्थ)	५००)	खालिसपुर, पं० गोकुल-पाठकजी का।
९०	वृषभध्वजेश्वराय नमः।		कपिलधारा गांव।

वृषभध्वज देवेश पितॄणां मुक्तिदायक।
आज्ञां देहि महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते॥

नं०	नाम देवता।	मरम्मत का अन्दाज।	पता।
९१	ज्वालानृसिंहाय नमः।		कोटवा गांव श्रीमन्महाराजाधिराज काशिराज का है।
९२	वरुणासङ्गमाय नमः।		वरनासङ्गम किला में।
९३	आदिकेशवाय नमः।		तथा।
९४	सङ्गमेश्वराय नमः।		तथा।
९५	खर्वविनायकाय नमः।	३५)	किले के भीतर।
९६	प्रह्लादेश्वराय नमः।		प्रह्लादघाट।
९७	त्रिलोचनेश्वराय नमः।		त्रिलोचनघाट।
९८	पञ्चगङ्गायै नमः।		पञ्चगङ्गाघाट।
९९	विन्दुमाधवाय नमः।		तत्रैव।
१००	गभस्तीश्वराय नमः।		मङ्गलागौरी के समीप।
१०१	मङ्गलागौर्य्यै नमः।		तत्रैव।
१०२	वशिष्ठेश्वराय नमः।		संकटाघाट प्रसिद्धम्।
१०३	वामदेवाय नमः		तत्रैव।
१०४	पर्वतेश्वराय नमः।		आत्माविश्वेश्वर के पास।
१०५	महेश्वराय नमः		मणिकर्णिकाघाट।
१०६	सिद्धविनायकाय नमः।		तथा।

१०७ सप्तावर्णविनायकाय नमः। ब्रह्मनाल (प्रसङ्गात्)।
१०८ मणिकर्णिकायै नमः।

पञ्चक्रोशी से आय के मणिकर्णिका में स्नान करके हमारे (श्रीविश्वनाथजीके) स्थान को जाना, वहां मोद प्रमोद सुमुख दुर्मुख गणनाथादि पञ्चविनायकों की पूजा करके हमारा (श्रीविश्वनाथजी का) तथा तुम्हारा (श्रीअन्नपूर्णाजी का) पूजन करके पुनः पुनः दण्डवत के उपरान्त नित्य यात्रा के देवताओं की पूजा करके श्रीविष्णु, दण्डपाणि, ढुंढिराज आदित्य, मोदादि पञ्चविनायकों की पूजा करके मुक्तिमण्डप में बैठ कर, प्रदक्षिणा के सम्पूर्ण देवताओं का नाम लेके अक्षत छोड़ना। हमसे (श्रीविश्वनाथजी से) प्रार्थना करना।

प्रार्थनामन्त्र।

जय विश्वेश्वर विश्वात्मन् काशीनाथ जगद्गुरो।
त्वत्प्रसादान्महादेव कृता क्षेत्रप्रदक्षिणा॥
अनेकजन्मपापानि कृतानि मम शङ्कर।
गतानि पञ्चक्रोशात्मसर्व्वलिङ्गप्रदक्षिणात्॥
त्वद्भक्तिः काशिवासश्च राहित्यं पापकर्म्मणाम्।
सत्सङ्गश्रवणाद्यैश्च कालो गच्छतु नः सदा॥
हर शम्भो महादेव सर्वज्ञ सुखदायक।
प्रायश्चित्तं सुनिर्वृत्तं पापानां त्वत्प्रसादतः॥
पुनः पापरतिर्मास्तु धर्मबुद्धिः सदाऽस्तु मे।

इस मन्त्र से प्रार्थना करके उस ब्राह्मण को (जो अ-क्षत छोड़ाते हैं) दक्षिणा देना और हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़ना ।

पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं यथावद्या मया कृता ।
न्यूना सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादुमापते ॥

यह कह के न्यूनाधिक पूर्णता के अर्थ, ब्राह्मणों को (भूयसी) दक्षिणा देना, और अपने २ घर जाकर यथा-शक्ति ब्राह्मणभोजन कराय के कुटुम्बों के सहित आप भो-जन करे । इस भांति यात्रा करने से काशीकृत सम्पूर्ण पाप तथा ब्रह्महत्यादि संपूर्ण पाप छूट जाते हैं । हे सुन्दरि यह ब्रह्मवैवर्तपुराण में लिखा है । हे प्रिये, अब तुम क्या पूछा चाहती हो सो कहो ? । यह सुनकर श्रीपार्वतीजी हाथ जोड़कर कहती भईं ।

श्रीपार्वत्युवाच ।

हे सदाशिव, हे शम्भो, हे मेरे प्राणनाथ, आपने काशी-कृत पातकों के प्रायश्चित्तार्थ पञ्चक्रोशीयात्रा का क्रम कहा, जिसके श्रवण से मैं परमानन्द को प्राप्त हुई । हे काशीनाथ मम नाथ त्रिपुरारे ! अब कृपा करके पञ्चक्रोशीयात्रा के वासस्थान तथा नियमों का वर्णन कीजिये । यह दीन वचन सुनकर श्रीविश्वनाथजी महाराज हँसकर बोले—हे सुन्दरि ध्यान देकर चित्त लगाकर सुनो, मैं वर्णन करता हूं । हे प्रिये ! यह विधिवत् पञ्चक्रोशी देवता से भी नहीं हो स-

करतो, तब दूसरों को कौन चलावे । हे प्रिये, एक समय ब्रह्मा, विष्णु और देवतागण सब यथाशास्त्र सूक्ष्म पञ्चक्रोशी यात्रा का निश्चय करके अङ्गदेवता सहित प्रत्येक लिङ्ग तथा देवताओं का पूजन विधिवत् करते २ निकले, बीस वर्ष में भीमचण्डी पहुंचे । वहां रविरक्ताक्ष गन्धर्व के पास विश्राम करते हुए बड़े विस्मय को प्राप्त भये, और आपस में कहने लगे कि यह यात्रा विधिवत् नहीं हो सकेगी । क्योंकि अभी थोड़े से देवता तथा लिंग हुए हैं, और बहुत से बाकी हैं । गणेश भैरवादि मूर्तियों की तो गणना ही नहीं है । प्रत्येक लिंग, देवता का पूजन करने से तो सबही काल बीत जायगा, और हमलोगों की आयु और पुरुषार्थ कहां? यथाविधि शास्त्रोक्त पूजन करने से शीघ्र मोक्ष का साधन होता है । संकल्प तो हो चुका, अब क्या करना उचित है । यदि संकल्प नष्ट हुआ तो पाप होगा । घोर तपस्या हो सकेगी परन्तु इस काशी की सूक्ष्म पंचक्रोशीयात्रा न हो सकेगी ।

ऐसा पश्चात्ताप करके सूक्ष्म मार्ग छोड़के स्थूल मार्ग से प्रदक्षिणा कियो । बड़े पराक्रमी नन्दी ने एक बार विधिवत् शास्त्रोक्त पंचक्रोश-प्रदक्षिणा किया है । और भैरव गणेश ने भी बड़े यत्न से कियो है, और को कौन गिनती है । अतएव कलिकाल के मनुष्यों के लिये ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार वास तथा नियम कहता हूं । हे प्रिये एक रात्रि वास करके पंचक्रोशीयात्रा किया चाहे तो रामेश्वर में वास करे, वह प्राणी परमगति को प्राप्त होता है । वरुणा का

सर्वथा उल्लंघन नहीं लिखा है। दो रात्रि वास करके यात्रा करना चाहै तो भीमचण्डी, रामेश्वर में वास करे। तीन रात्रि वास करके यात्रा करनेवाला दुर्गाकुण्ड, भीमचण्डी, रामेश्वर में वास करे और चार रात्रि में यात्रा करने की इच्छावाला तो कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, रामेश्वर और कपिलधारा में वास करे। शिवरहस्य में तो सात दिन का वास कहा है, -- दुर्गाकुण्ड, कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, देहलीविनायक, रामेश्वर, पाशपाणिविनायक और कपिलधारा में वास करे। राजा, वृद्ध, सुकुमार बालकों के लिये जहां इच्छा होय वहां हो वास करके यात्रा करना उचित है। किसी प्रकार से क्षेत्र की प्रदक्षिणा करनी चाहिये। क्योंकि कलियुग में श्रद्धा अति दुर्लभ होगी। श्रद्धा ही से तीर्थ, श्रद्धा ही से स्वर्ग और मोक्ष होता है। अब पंचक्रोशी के नियम कहते हैं सुनो। हे प्रिये प्रतिग्रह, परान्न, परस्त्री से अभिलाषापूर्वक भाषण, परधनग्रहण, असत्यभाषण, दुर्जन पापियों का संग तथा किसी प्रकार की पापबुद्धि नहीं करना। सीमा के भीतर अर्थात् दहिनी ओर मल मूत्र नहीं करना, और थूकना तक नहीं। दीन, अनाथ, पंगु और ब्राह्मणों का यथाशक्ति सत्कार करना तथा कुछ देना। भूमि में शयन करना, तेल मांसादि सेवन नहीं करना। माषान्नादि उरद मसुरी चना कोदो यह सब अन्न, और पान नहीं खाना। मैथुनादि भोग नहीं करना, छाता और पादुका धारण

नहीं करना, हाथ पांव की चंचलता छोड़ के मौन से यात्रा करना, दो वक्त स्नान अवश्य करना, नित्य श्राद्ध तथा तर्पण करना अवश्य उचित है। इसी प्रकार से पंचक्रोशीयात्रा से महा फल और काशीकृत संपूर्ण पापों का नाश होता है। ब्रह्महत्यादि बड़े २ पाप नष्ट हो जाते हैं। ब्रह्मचारी वा गृहस्थ वा वाणप्रस्थादि सबको पंचक्रोशीयात्रा करना अवश्य उचित है।' काशी में बसनेवालों से जो भूल चूक हो जाती है उसकी शुद्धि के अर्थ इससे बढ़कर कोई दूसरा उपाय नहीं है।

इति।